उपसंहार

हिन्दी साहित्य में परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार अनेक परिवर्तन होते आए हैं। यह परिवर्तित होती प्रवृति हिन्दी साहित्य में अगल-अलग कालखंडों को जन्म देती है। जिससे साहित्य में अलग-अलग विशेषताएं लक्षित की गईं। इन परिवर्तित होती प्रवृतियों से कभी साहित्य का कथ्य बदलता है तो कभी शिल्प। कभी उसका भाव बदलता है तो कभी उसका रूप। कभी उसकी भाषायी संरचना में परिवर्तन हुआ है तो कभी उसकी शैली में। हिन्दी साहित्य इन विविध व परिवर्तित होती प्रवृतियों के बीच राजाओं के राजदरबार, संतों की कुटियों और रीतिकालीन श्रृंगारिकता से होते हुए आधुनिक काल में हिन्दी कविता राष्ट्रीयता के साथ जुड़ती है क्योंकि तब तक राजाओं व सामंतों के साम्राज्य लगभग खत्म हो चुके थे या जो थे भी वे ब्रिटिश हुकूमत के अधीन थे। जिससे मुक्ति सब चाहते थे। और यही मुक्ति की भावना राष्ट्रीयता को प्रबल बनाती चली जाती है। हिन्दी साहित्य में जिसका प्रवर्तन भारतेन्दु युग में होता है। किन्तु भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय चेतना हमें दोहरे रूप में दिखाई पड़ती है। एक तो राष्ट्र भक्ति के रूप में दूसरी राजभक्ति के रूप में। राष्ट्रीय काव्य धारा हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख काव्य धारा है। पर हिन्दी साहित्य में सच्चे राष्ट्र भाव की जागृति द्विवेदी युग में होती है।

जहां राजभक्ति का प्रभाव खत्म होता है और राष्ट्रीयता का आवेग प्रबल होता है जिसमें मैथिलीशरण गुप्त जैसे राष्ट्रकवि होते हैं तो 'भारत-भारती' जैसे महान ग्रंथ का निर्माण भी होता है जो साहित्य में राष्ट्रीयता के स्वर को और अधिक तेज करती है और इसकी परंपरा मजबूत होती चली जाती है जो आगे चलकर स्वतंत्र रूप से राष्ट्रीय काव्य धारा के रूप में साहित्य में परिणत होती है। यह राष्ट्रीय काव्यधारा छायावाद की ही एक उप-काव्य धारा के रूप में दिखाई पड़ती है। इस राष्ट्रीय काव्यधारा में प्रमुख कवियों के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त और सोहनलाल द्विवेदी इत्यादि हुए। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने राष्ट्रीय भावना को सबसे ऊपर करके काव्य सृजन किया। राष्ट्रीय काव्यधारा हिन्दी साहित्य का एक प्रतापी काव्यान्दोलन है। जिसमें राष्ट्रीयता की भावना अपने उत्कर्ष पर है। जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी की ललकार है तो दिनकर की घोर गर्जना।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में माखनलाल चतुर्वेदी तथा दिनकर की राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन किया गया है। भाषा के सामान्यतः दो भेद किए जाते हैं- मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा। लिखित भाषा के अंतर्गत भी भाषा के दो भेद किए जाते हैं- काव्यभाषा एवं गद्य की भाषा। काव्यभाषा वह भाषा है जो काव्य तत्त्वों से बंधी होती है। भाषा तत्त्वों

के आधार पर माखनलाल चतुर्वेदी एवं रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं का अध्ययन करते हुए उनके व्यक्तितत्त्व के साथ उनके भाषायी संबंध को भी प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में राष्ट्र, राष्ट्रीयता की उत्पत्ति-विकास व उसके पोषक तत्त्वों पर विचार विश्लेषण करते हुए काव्यभाषा के स्वरूप व उसके उपादानों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। विभिन्न कालखंडों में राष्ट्र का स्वरूप क्या रहा, और वर्तमान में राष्ट्र को किस रूप में वर्णित किया जाता है, इस पर विद्वानों के विचार क्या है, इत्यादि का विश्लेषण करते हुए, राष्ट्रीयता की भावना क्या है? यह किस रूप में पनपी इस पर विस्तृत चर्चा की गई है। साथ ही राष्ट्र व राष्ट्रीयता के पोषक तत्वों का वर्णन है और काव्यभाषा का स्वरूप एवं उसके उपादान के अंतर्गत काव्य क्या है? एवं काव्य का स्वरूप क्या है?, को बताते हुए भाषा क्या है? एवं काव्यभाषा के भेद, काव्यभाषा के तत्त्व इत्यादि के स्वरूप एवं उसके तत्त्वों को समझते हुए काव्यहेतु, काव्य प्रयोजन ,काव्य लक्षण, काव्यगुण, काव्यदोष, रस, छंद, अलंकार, शब्दशक्ति तथा राष्ट्रीय काव्य की भाषा इत्यादि का अध्ययन किया है।

द्वितीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी एवं दिनकर जी के काव्य में युगीन परिस्थितियाँ एवं दोनों कवियों के काव्य में उद्घाटित राष्ट्रीय स्वर का अध्ययन किया गया है। प्रामाणिक व यथार्थ लेखन वही माना

जाता है जो अपने समय, अपने युग बोध से आप्लावित हो। जिसमें उसके समय की आवाजों की गूँज हो। माखनलाल चतुर्वेदी व दिनकर जी के काव्य में न केवल युगीन परिस्थियाँ आती हैं बल्कि इनकी आवाज अपने समय की सबसे प्रतापी व तेज़ आवाज़ है। जिसमें इनकी राष्ट्रीय कविताओं का स्वर शिखर पर है। इनकी राष्ट्रीय कविताएं न केवल कविताएं हैं बल्कि वे देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्ति के संधान की कविताएं हैं। इनकी राष्ट्रीय कविताएं लोगों को आह्वान करती हुई कविताएं हैं । अपने लोगों से अपील करती हुई इनकी कविताएं हैं तो दुश्मनों के लिए इनकी कविताएं एक चुनौती है। इनकी राष्ट्रीय कविताएं किसी ज्वाला से कम नहीं हैं। इनकी कविताएं आशा उत्साह व ओज का संचार करती कविताएं हैं। माखनलाल चतुर्वेदी व दिनकर अपने युगीन परिस्थितियों से वैसे ही जुड़े हुए हैं जैसे इनके पूर्वज साहित्यकार बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र, पंडित प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद्र आदि अपने युगीन परिस्थितियों से जुड़े हुए थे। इनकी राष्ट्रीय कविताएं एक सजग प्रहरी की भाँति हैं, जैसे एक सजग प्रहरी अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तन्मय होकर खड़ा रहता है वैसे ही इनकी कविताएं राष्ट्र हित में एक सजग प्रहरी की भाँति तनकर खड़ी हुई कविताएं है।

तृतीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तितत्व व कृतित्व को प्रस्तुत किया गया है। माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तितत्व एक बहुआयामी

प्रतिभा संपन्न व्यक्तितत्व है। जिसमें वे कभी साहित्यकार की भूमिका में दिखते हैं तो कभी कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार, कभी प्राध्यापक तो कभी सक्रिय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की तरह दिखाई पड़ते हैं। राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रीयता उनके व्यक्तितत्व में धमनियों में रक्त की तरह प्रवाहित है। माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व की विराटता व उनकी राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होकर उन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में याद किया जाता है। माखनलाल चतुर्वेदी जितने बड़े कवि हैं उतने ही बड़े वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी हैं। यानि उनके एक हाथ में कलम है तो दूसरे हाथ में तलवार। वे अपने आपको सम्पूर्ण रूप से राष्ट्र के लिए समर्पित कर देते हैं और 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में जो पुष्प की अभिलाषा है, वह स्वयं कवि की अभिलाषा है कि वह राष्ट्र हित राष्ट्र सेवा में अपने आप को समर्पित कर दें। इस तरह से माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व के विविध रूपों से परिचित होते हुए उनके कृतित्व का अध्ययन किया है। कृतित्व में चतुर्वेदी जी हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, (जिसे प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है) माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा, आज के लोक प्रिय हिन्दी कवि, मरण- ज्वार, बीजुरी काजल आँज रही इत्यादि इनकी काव्य रचनाएं रही हैं। गद्य रचनाओं में साहित्य देवता, अमीर इरादे-गरीब इरादे, रंगों की बोली, इनके निबंध हैं। वनवासी, कला का अनुवाद कहानी है। चिंतक की लाचारी भाषण संग्रह है, विदया विलासी बालक, कृष्णार्जुन युद्ध इनके

नाटक हैं। शिशुपाल वध इनके द्वारा किया गया अनुवाद है। तथा संपादक के रूप में इन्होंने प्रभा, प्रताप, कर्मवीर का संपादन किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत रामधारी सिंह दिनकर के व्यक्तितत्त्व व कृतितत्त्व को प्रस्तुत किया गया है। रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तितत्त्व एक दिव्य व्यक्तितत्त्व है जिसमें भारत की दिव्य ज्योति अखंड रूप से जलती है। उनका व्यक्तितत्त्व बहुआयामी व्यक्तितत्तव है। जिसमें सबसे उज्ज्वल रूप उनकी राष्ट्रीयता का है। राष्ट्रीयता उनका पौरुष है। ओज उनका तेज है। दिनकर जी के व्यक्तितत्त्व में एक तरफ आग है, तो दूसरी तरफ राग है। एक तरफ उनमें भारत के अतीत की गौरव गाथा है, तो दूसरी तरफ उसके उज्ज्वल भविष्य निर्माण के सपने। दिनकर सच्चे अर्थों में राष्ट्र के अमर गायक हैं। उनके अंदर के राष्ट्र पुरुष को देखकर ही उन्हें डिप्टी राष्ट्रकवि की उपाधि दी गई है। दिनकर जी के व्यक्तितत्त्व में उनका सामाजिक चिंतक का रूप भी दिखाई पड़ता है। जहाँ वे समाज व मनुष्य की समस्याओं को लेकर चिंतित होते हैं। वहीं विसंगतियों के प्रतिरोध में दिनकर जी की आवाज एक चुनौती पूर्ण आवाज है। जो शासन सत्ता से लेकर बड़े-बड़े पूंजीपतियों तक के कान खड़े कर देती है। इनके साथ ही दिनकर जी के व्यक्तितत्त्व में एक कुशल राजनेता और शैक्षिक प्रशासनिक का भी व्यक्तितत्त्व है। इनके व्यक्तितत्त्व और उनके साहित्य की विराटता के

फलस्वरूप ही इन्हें साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है। साथ ही नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। इस तरह से कहा जा सकता है कि दिनकर जी का व्यक्तितत्व कई आयामों से परिपूर्ण एक सम्पूर्ण व्यक्तितत्व है। साहित्यिक रूप से भी दिनकर अत्यंत समृद्ध हैं। वे एक तरफ राष्ट्रीय कविताएं लिखते हैं, तो दूसरी तरफ मिथकों का प्रयोग कर खंडकाव्य व महाकाव्य भी लिखते हैं और चिंतन प्रधान निबंध लिखते हैं। दिनकर जी की काव्य कृतियों को यदि हम देखें तो उनमें- बरदोली विजय, प्रणभंग (खंडकाव्य), रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्द्वगीत, कुरूक्षेत्र (महाकाव्य), धूपछाँह (बाल साहित्य), सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, मिर्च का मजा (बाल साहित्य), धूप और धुआँ, रश्मिरथी (खंडकाव्य), दिल्ली, नीम के पत्ते, नील कुसुम, सूरज का व्याह (बाल साहित्य), चक्रवाल, कवि-श्री, सीपी और शंख (अनुदित काव्य), नए सुभाषित, लोकप्रिय कवि दिनकर, उर्वशी (गीति नाट्य महाकाव्य,ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत), परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मा की आँखें (अनुदित काव्य संग्रह), कोयला और कवित्त्व, हारे को हरिनाम, दिनकर के गीत, रश्मिलोक इत्यादि दिनकर की काव्य रचनाएं हैं। तथा इनकी गद्य रचनाओं में मिट्टी की ओर, चित्तौड़ का साका, अर्धनारीश्वर, रेती के फूल, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, हमारी सांस्कृतिक एकता, भारत की सांस्कृतिक कहानी, संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, देश विदेश, काव्य की भूमि , वेणुवन, वट पीपल,

लोकदेव नेहरू, शुद्ध कविता की खोज, राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी, धर्म, नैतिकता और विज्ञान, भारतीय एकता, मेरी यात्राएं, दिनकर की डायरी इत्यादि इनका गद्य साहित्य है। यह दिनकर जी का विराट रचना संसार है जिसमें उनका जीवन और उनका राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक चिंतंन के संपूर्णता दिखाई पड़ती है।

अंतिम और पंचम अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा का अध्ययन किया गया है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा व साहित्य का संबंध अन्योन्याश्रित संबंध होता है। भाषा के सामान्यतः दो भेद किए जाते हैं। मौखिक भाषा व लिखित भाषा। लिखित भाषा ही सामान्यतः साहित्य की भाषा होती है। साहित्यिक भाषा के भी दो भेद किए गए हैं। काव्य की भाषा व गद्य की भाषा। काव्यभाषा यदि छंद, लय व ताल से युक्त होती है तो गद्य की भाषा छंद, लय व ताल से मुक्त। माखनलाल चतुर्वेदी जी व रामधारी सिंह दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा परिमार्जित, परिष्कृत खड़ी बोली हिन्दी है। जो रस, छंद और अलंकार से सिक्त है। ओज, प्रसाद व माधुर्य काव्य गुणों से युक्त है। अभिधा, लक्षणा व व्यंजना से परिपूर्ण है। तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्दों के योग से निर्मित है। प्रतीकों व बिंबों से सजी हुई है। लोकोक्ति व मुहावरों से सशक्त बनी हुई है। चित्रात्मकता इनकी भाषा को सजीवता से भर रही है

तो, ध्वन्यात्मक शब्दों से गूँज उत्पन्न हो रही है। कल्पनात्मकता भावों को विस्तारित कर रही है तो भावात्मकता ओज का संचार कर रही है। माखनलाल चतुर्वेदी व दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा उनकी कविताओं के तेवर के अनुकूल एक सशक्त व मंजी हुई भाषा है। जिसमें अभिव्यक्ति की असाधारण क्षमता है। साहित्य सरिता में प्रवाहित इनकी भाषा अपने कूल व कछार स्वयं निर्मित करती है। भाषा व काव्य के संबंधों के रूप में यदि हम कहना चाहें तो यह कह सकते हैं कि भाषा साहित्य का हार्डवेयर है तो भाव साहित्य का साफ्टवेयर। जिसमें भाषा का संबंध साहित्य के बाह्य उपकरणों (हार्डवेयर) से है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

<u>आधार ग्रंथ</u>

माखनलाल चतुर्वेदी

1. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमकिरीटिनी, इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, द्वितीय सं.
2. चतुर्वेदी माखनलाल, कृष्णार्जुन युद्ध नाटक, प्रकाश पुस्तकालय, सांतवा सं.
3. जोशी श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली-7, वाणी प्रकाशन, द्वितीय सं.-2003
4. चतुर्वेदी माखनलाल, मरण ज्वार, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्र., सं.-1963
5. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमतरंगिनी, भारत भंडार, प्रयाग, प्रथम संस्करण: सं. 2005
6. चतुर्वेदी माखनलाल, युगचरण, भारती भंडार प्रकाशक, प्रयाग, प्रथम संस्करण, सं.-२०१३ वि.
7. चतुर्वेदी माखनलाल, समर्पण, भारती भंडार प्रकाशक, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, सं.-२०१३ वि.
8. जोशी श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली-6, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2003

9. चतुर्वेदी माखनलाल, बीजुरी काजल आँज रही, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1969

10. चतुर्वेदी माखनलाल, वेणु लो, गूँजे धरा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी द्वितीय संस्करण-1965

रामधारी सिंह दिनकर

1. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति, भाषा और राष्ट्र, प्र.सं.-2008, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
2. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन, नवीन संस्करण-2003,
3. दिनकर रामधारी सिंह, काव्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान सं.-2013
4. दिनकर रामधारी सिंह, चक्रवाल, उदयाचल, पटना, प्र. सं.-1956
5. दिनकर रामधारी सिंह, आधुनिक बोध, पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली, प्र. सं.-1973
6. दिनकर रामधारी सिंह, रेणुका, उदयाचल, पटना, संस्करण,15 नवम्बर 1954
7. दिनकर रामधारी सिंह, सामधेनी, उदयाचल, पटना, द्वितीय संस्करण-1949

8. दिनकर, रामधारी सिंह, प्रणभंग तथा अन्य कविताएँ, राजपाल एण्ड सन्ज़, प्र. सं.-1976
9. दिनकर रामधारी सिंह, रश्मिरथी, श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, पटना, प्र. सं.-1952
10. दिनकर रामधारी सिंह, परशुराम की प्रतीक्षा, उदयाचल, पटना, द्वि., सं. पुनर्मुद्रण-1986
11. दिनकर रामधारीसिंह, नीलकुसुम, केदारनाथ सिंह, उदयाचल, पटना, प्रथम संस्करण, पुनर्मुद्रण 1954
12. दिनकर रामधारी सिंह, मिटटी की ओर, उदयाचल, पटना, द्वितीय सं.-1949
13. दिनकर रामधारी, रसवंती, उदयाचल, पटना, चतुर्थ सं.
14. दिनकर रामधारी, द्वंदगीत (इतिहास), उदयाचल, पटना, चतुर्थ सं.
15. दिनकर रामधारी, बापू, उदयाचल, पटना, द्वि., सं.-1948
16. दिनकर रामधारी सिंह, अर्धनारीश्वर, जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता, प्र. सं.
17. दिनकर रामधारी सिंह, कवि श्री, साहित्य सदन, झांसी प्रथमवृति 2012 वि.
18. दिनकर रामधारीसिंह दिनकर, कोयला और कवित्त्व, उदयाचल, पटना, प्र. सं.-1964

19. दिनकर रामधारी सिंह, मृत्ति-तिलक, चक्रवाल प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण- 1964

20. दिनकर रामधारी सिंह, हुंकार, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, प्रथम पेपरबैक संस्करण-2002

21. दिनकर रामधारीसिंह, दिल्ली, उदयाचल, पटना

22. दिनकर रामधारीसिंह, इतिहास के आँसू, श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, पटना, प्रथम संस्करण-1951

23. दिनकर रामधारी सिंह, कुरुक्षेत्र, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2003

<u>सहायक ग्रंथ</u>

माखनलाल चतुर्वेदी

1. जोशी श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, प्र.सं.-1969, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

2. महाले सुभाष, माखनलाल चतुर्वेदी और वि. दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर, सं.-1997

3. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और काव्य, अनुसन्धान प्रकाशक, कानपुर, 1966

4. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, जवाहरलाल पुस्तकालय प्र. सं.-2000

5. शर्मा रामाधार, श्री माखनलाल चतुर्वेदी (एक अध्ययन), सरस्वती मंदिर, बनारस, प्र.सं.-1995

6. टंडन प्रेमनारायण, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, श्री नंदनंदन लखनऊ, प्र.सं.-1970

7. बरूआ, ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960

8. जोशी श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969

9. जैन लक्ष्मीचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी: जीवनी, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्र.सं.-1960

10. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.,सं.-1979

11. प्रेमी हरिकृष्ण, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड सन्ज, पांचवां सं.-1973

12. चौरे जगदीशचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशीलन, सत्येन्द्र प्रकाशन, इलाहबाद, प्र.सं.-1982

13. यादव सुरेन्द्र, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता, प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण-1978

रामधारी सिंह दिनकर

1. जैन शेखरचंद्र, राष्ट्रकवि दिनकर और उनकी काव्यकला, प्र.सं.-1973
2. सुनीति, दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
3. सिंह रमारानी, दिनकर साहित्य में व्यक्तितत्व की अभिव्यक्ति, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण-1994
4. सिन्हा सावित्री, युगचारण दिनकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्र. सं.-अक्तूबर, 1963
5. कुंदन, दिनकर के काव्य पर भारतीय राजनीति का प्रभाव, अपर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2015
6. अनुपमा, दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक चेतना, एस कुमार एंड कम्पनी, नई दिल्ली, सं.-2015
7. शर्मा कृष्णदेव एवं अग्रवाल माया, उर्वशी एक विवेचन, अनिता प्रकाशन, दिल्ली, नवीनतम सं.
8. तिवारी यतीन्द्र, दिनकर की काव्यभाषा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्र. सं.-1976
9. चन्द्र गिरीश, रामधारी सिंह दिनकर का काव्य एक अनुशीलन, साधना प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं.-2010

10.सावित्री सिन्हा, दिनकर, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, चौथी आवृति-1998

11.परमार सरला, दिनकर की काव्यभाषा: शैलीविज्ञान अध्ययन, संस्कृति प्रकाशन, अहमदाबाद, द्वि.,सं.-1991

12.प्रतिमा जैन, दिनकर काव्य कला और दर्शन, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर,प्रथम संस्करण 1980

<u>अन्य सहायक ग्रंथ</u>

1. नगेन्द्र, हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 66 वां संस्करण-2018
2. नगेन्द्र, आधुनिक हिंदी कविता की प्रमुख प्रवृतियां, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
3. गुप्त सुरेशचंद्र, काव्यशास्त्रीय चिंतन, रवींद्र प्रकाशन, आगरा, संस्करण-1972
4. थरेजा पुष्पा, भारतेंदु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय भावना, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली , प्र.सं.-1978
5. ठाकुर कवीश्वर, हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, सं.-2009
6. कलवड़े सुधाकर शंकर, आधुनिक हिंदी की कविता में राष्ट्रीय भावना, पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्र.स.-1973

7. तिवारी अर्जुन, पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास, जयभारती प्रकाशन, प्र.सं.- 2000

8. पाण्डेय रजनीकांत, कौटिल्य अर्थशास्त्र में सत्ता एवं राजनीति, नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स, प्र.सं.-1990

9. पथिक देवराज शर्मा, नई कविता में राष्ट्रीय चेतना, कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं.-1985

10. हिंदी विश्वकोश, भाग-23, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्र.सं.-2011

11. पथिक देवराज शर्मा, हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा का समग्र अनुशीलन, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन प्र.सं.-1979

12. साकरिया भूपतिराम, महाप्राण निराला, कन्हैयालाल पंडया, प्र.सं.-2002

13. विरमाल पंकज, हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना, प्र. सं.-2017

14. मृणालिनी उषा, गीतिकाव्य में राष्ट्रीय भावना, सुनील प्रकाशन, अजमेर

15. रायगुलाब, राष्ट्रीयता, संस्करण-1961

16. मंत्रीज्योति ना, राष्ट्रीय चेतना के सन्दर्भ में भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त एवं मारीशस के राष्ट्रकवि डॉ. ब्रजेन्द्र भगत 'मधुकर' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2012

17.ओझा नर्मदेश्वर, राष्ट्रीयता सांस्कृतिक अवधारणा, विहार, संस्कृत, प्रसार परिषद प्र.सं.-1999

18.शुक्ल आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, सुधा पब्लिकेशंस, जयपुर, संवत-1997

19.तलाटी रमणलाल न., सोहनलाल द्विवेदी का काव्य, चिंता प्रकाशन, राजस्थान, प्र.सं.-1988

20.खान खुर्शीद आलम, देशभक्ति आन्दोलन में मैथिलीशरण गुप्त का योगदान, अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली प्र.सं.-2010

21.मधोक बलराज, हिंदु राष्ट्र, भारतीय साहित्य सदन, दिल्ली, तृतीय सं.-1971

22.तामसकर गोपाल दामोदर, कौटिल्य अर्थशास्त्र - मीमांसा, प्रयाग, इंडियन प्रेस

23.नारायण पांडेय, भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, प्र.सं.-1996

24.सिंह निहाल गुरुमुख, भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास, सं.-1952

25.तिवारी उदयनारायण, वीर काव्य, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र. सं.-संवत् 2005 वि.

26.सम्पादित (धीरेन्द्र वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, ब्रजेश्वर शर्मा, हिंदी साहित्य, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग, प्र.सं.-1969

27. कौशिक जगदीश प्रसाद, काव्य एवं काव्य रूप, जयपुर, ग्रन्थ विकास, प्र. सं.-1987

28. शुक्ल रामचंद्र, काव्य मीमांसा, अग्रवाल प्रेस, प्रयाग, प्र.सं.-1931

29. कालड़ा नीलम, भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यभाषा का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, अनुराग प्रकाशन, प्र.सं.-1995

30. शर्मा मनीषा एवं गुप्त जगदीश, काव्य सिद्धांत एवं सृजन, मनु प्रकाशन

31. कुमार विभुमौली, काव्यभाषा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सं.-2005, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली

32. चतुर्वेदी रामस्वरूप, मध्यकालींन हिन्दी काव्यभाषा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्र.सं.-1974

33. मम्मट, काव्यप्रकाश, साहित्य भण्डार, मेरठ, तृतीय सं.-1970

34. मिश्र भागीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम सं.-1902

35. अग्रवाल निशा, भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 11वां सं.-2018

36. चौधरी सत्यदेव, भारतीय काव्यशास्त्र सुबोध विवेचन, अलंकार प्रकाशन, सं.-2015

37. इंगले जलिंदर, सुबोध काव्यशास्त्र, प्र.सं.-2008, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर

38.मिश्र रामदहिन, काव्य दर्पण, प्र.सं.-1970, ग्रंथमाला कार्यालय प्रकाशन, पटना
39.सिंह विजयपाल, भारतीय काव्यशास्त्र, प्र.सं.-1998, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
40.कठौरिया कृष्णा, रीतिमुक्त कवि बोधा की काव्यभाषा का अध्ययन, शोध प्रबंध, कानपुर, 1997
41.तिवारी बद्रीनाथ, काव्यशास्त्र के विविध सोपान, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.-2015
42.श्री निवासशास्त्रीणा, मम्मटाचार्यविरचित काव्यप्रकाश, साहित्य भंडार, मेरठ, तृ.सं.-1970
43.वाघमरे पी. एम., भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत, अभय प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2014
44.देशमुख मधुकर, सुबोध काव्यशास्त्र, प्र.सं.-2015, अभय प्रकाशन, कानपुर
45.गुप्त गणपतिचन्द्र, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत, प्र.सं.-2009, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
46.तिवारी भोलानाथ, शब्दों का अध्ययन, प्र.सं.-1969, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली
47.दुबे सुरेन्द्र, दिनकर की काव्यभाषा का संरचनात्मक अध्ययन, शब्द और शब्द, दिल्ली, प्र.सं.-1981

48.शर्मा वेंकेट, रस अलंकार, छंद तथा अन्य काव्यांग, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्र.सं.-1998

49.सिंह रामकुमार, आधुनिक हिंदी काव्यभाषा, ग्रन्थम प्रकाशक, कानपुर-1965

50.प्रसाद कृष्ण नारायण, हिंदी-साहित्य: युग और धारा, पटना, भारती भवन प्रकाशन प्र.सं.-2008

51.नागर पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्र.सं.-1980

52.विमलेश एवं भंडारी आनंदचंद, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, तृतीय सं.-1980

53.गुप्त मन्मथनाथ, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि, राजकमल एंड सन्ज, दिल्ली, सातवा सं-1978

54.चतुर्वेदी रामस्वरूप, काव्यभाषा पर तीन निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण-2008

55.शुक्ल रामचन्द्र, चिंतामणि, भाग पहला, अनु प्रकाशन, जयपुर संस्करण-2005

56.सिंह योगेंद्र प्रताप, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना, श्यामा प्रकाशन संस्थान, इलाहाबाद, संस्करण 2018-2019

57. राहुल, गिरिजाकुमार माथुर काव्य-दृष्टि और अभिव्यंजना, भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-1996

58. सिंह रविनाथ, काव्य-भाषा: चिंतन और सिद्धांत, योगेश प्रकाशन, बंबई, प्रथम संस्करण-1983

59. सूर्यप्रकाश, लोकोक्ति और मुहावरा स्वरूप विश्लेषण, लोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990, पूर्वपीठिका से

पत्र-पत्रिकाएं

1. शुक्ला सन्नी, IJCRT, volume 8, Issue 12 December 2020, ISSN: 2320-2882
2. मालवीय सौरभ, रमाशंकर, मीडिया मीमांसा अप्रैल- जून 2018

वेबसाइट

1. http://kavyaalaya.org/pushp_kee_abhilaashaa, दिनांक- 25-05-2022
2. aajtak.intoday.in/story/revolutionary-poet-ramdhari-sing-dinkar-1-54996.html
3. http://kavishala.in दिनांक- 29-05-2022
4. https://books.google.co.in (19-06-2022)